JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कृषि विकास में अवस्थापनात्मक सुविधाओं की भूमिकाः बस्ती जनपद का एक भौगोलिक अध्ययन

सपना त्रिपाठी

शोध छात्रा, भूगोल विभाग, का० सु० साकेत पी० जी० कालेज, अयोध्या

डॉ० सरला शुक्ला

सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, का० सु० साकेत पी० जी० कालेज, अयोध्या

सारांशः

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार है तथा ग्रामीण जनसंख्या की आजीविका का प्रमुख स्रोत भी है। कृषि विकास की प्रक्रिया अनेक भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें अवस्थापनात्मक सुविधाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। सिंचाई, परिवहन, विद्युत, संचार, कृषि आदान उपलब्धता, भंडारण तथा विपणन सुविधाएँ कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता को प्रभावित करने वाले प्रमुख अवयव हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तर प्रदेश के बस्ती जनपद में कृषि विकास पर अवस्थापनात्मक सुविधाओं के प्रभाव का भौगोलिक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में पिछले दशक के दौरान कृषि अवस्थापनात्मक सुविधाओं में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। नहरों की लंबाई, राजकीय एवं निजी नलकूपों की संख्या, विद्युतीकृत ग्रामों तथा ऊर्जीकृत पम्पसेटों में वृद्धि से सिंचाई क्षमता का विस्तार हुआ है। इसी प्रकार पक्की सड़कों के विकास ने कृषि आदानों की उपलब्धता तथा कृषि उत्पादों के विपणन को सुगम बनाया है। बीज, उर्वरक एवं कीटनाशक विक्रय केन्द्रों तथा ग्रामीण गोदामों की संख्या में वृद्धि ने आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रसार एवं कृषि उत्पादन की दक्षता को बढ़ावा दिया है। इन सुविधाओं के विस्तार के परिणामस्वरूप जनपद में खाद्यान्न फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि बस्ती जनपद के विभिन्न विकासखण्डों में अवस्थापनात्मक सुविधाओं की उपलब्धता एवं कृषि विकास के स्तर में क्षेत्रीय विषमताएँ विद्यमान हैं। जिन क्षेत्रों में सिंचाई, परिवहन, विद्युत एवं कृषि सेवा सुविधाएँ अधिक विकसित हैं, वहाँ कृषि विकास अपेक्षाकृत उच्च स्तर पर पाया गया है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अवस्थापनात्मक सुविधाएँ कृषि विकास की आधारभूत एवं प्रेरक शक्ति हैं तथा इनके संतुलित एवं समुचित विकास से कृषि उत्पादकता, किसानों की आय तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

सूचक शब्दः कृषि, विकास, अवस्थापनात्मक सुविधा, ग्रामीण विकास, कृषि नियोजन, विषमता।

परिचयः

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था का आधारभूत स्तंभ है तथा देश की एक बड़ी जनसंख्या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं उससे संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है। कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि केवल प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इसके लिए विभिन्न अवस्थापनात्मक सुविधाओं का सुदृढ़ एवं संतुलित विकास भी आवश्यक है। सड़क, सिंचाई, विद्युत, भंडारण, बाजार, संचार, परिवहन, बैंकिंग तथा कृषि सेवा केंद्र जैसी अवस्थापनात्मक सुविधाएं कृषि विकास की गति एवं दिशा को निर्धारित करने वाले प्रमुख कारक हैं। इन सुविधाओं की उपलब्धता किसानों को आधुनिक तकनीकों के उपयोग, कृषि निवेशों की सुलभ प्राप्ति तथा उत्पादों के प्रभावी विपणन में सहायता प्रदान करती है (Bhalla and Singh. 2010)। वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें भूमि जोतों का विखंडन, उत्पादन लागत में वृद्धि, जलवायु परिवर्तन तथा बाजार संबंधी समस्याएं प्रमुख हैं। ऐसी परिस्थितियों में अवस्थापनात्मक सुविधाओं का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि ये कृषि उत्पादन प्रणाली को अधिक सक्षम, प्रतिस्पर्धी एवं टिकाऊ बनाने में सहायक होती हैं (Datt and Sundharam. 2021)। जिन क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक सुविधाएं विकसित हैं, वहां कृषि का व्यावसायीकरण, फसल विविधीकरण तथा किसानों की आय में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि देखी जाती है, जबकि इन सुविधाओं के अभाव वाले क्षेत्रों में कृषि विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी रहती है। उत्तर प्रदेश का बस्ती जनपद कृषि प्रधान क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, जहां अधिकांश जनसंख्या की आजीविका कृषि पर आधारित है। जनपद में कृषि विकास की स्थिति विभिन्न भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों के साथ–साथ अवस्थापनात्मक सुविधाओं की उपलब्धता एवं गुणवत्ता से भी प्रभावित होती है (Hazell and Ramasamy. 1991)। बस्ती जनपद की भौगोलिक परिस्थितियां, कृषि संसाधन एवं ग्रामीण संरचना इसे कृषि विकास के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाती हैं। अतः कृषि विकास में अवस्थापनात्मक सुविधाओं की भूमिका का भौगोलिक विश्लेषण न केवल क्षेत्रीय कृषि विकास की वास्तविक स्थिति को समझने में सहायक होगा, बल्कि कृषि नियोजन एवं ग्रामीण विकास से संबंधित नीतिगत निर्णयों के लिए भी उपयोगी आधार प्रदान करेगा।

अध्ययन क्षेत्रः

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र बस्ती जनपद 26°23′′16′ से 27°30′′07′ उत्तरी अक्षांश तथा 82°17′′11′ से 83°20′′23′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। यह जनपद उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण कृषि प्रधान जनपद है। इसके उत्तर में सिद्धार्थनगर, पूर्व में संत कबीर नगर, पश्चिम में गोण्डा तथा दक्षिण में अयोध्या एवं अम्बेडकर नगर जनपद स्थित हैं। जनपद की दक्षिणी सीमा घाघरा नदी तथा उत्तरी सीमा आमी नदी द्वारा निर्धारित होती है। घाघरा, आमी तथा मनवर नदियाँ जनपद की प्रमुख नदियाँ हैं, जो क्षेत्र की कृषि एवं सिंचाई व्यवस्था को प्रभावित करती हैं। बस्ती जनपद की दक्षिण से उत्तर तक लंबाई लगभग 70 किलोमीटर तथा पश्चिम से पूर्व तक चौड़ाई लगभग 55 किलोमीटर है। जनपद मुख्यालय बस्ती नगर घाघरा नदी के तट पर राष्ट्रीय राजमार्ग–28 के किनारे स्थित है। 2,688 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाला यह जनपद उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी एवं कृषि अनुकूल परिस्थितियों के कारण कृषि विकास एवं अवस्थापनात्मक सुविधाओं के अध्ययन हेतु उपयुक्त क्षेत्र है।

मानचित्र संख्या 01 : बस्ती जनपद की अवस्थिति एवं विस्तार।

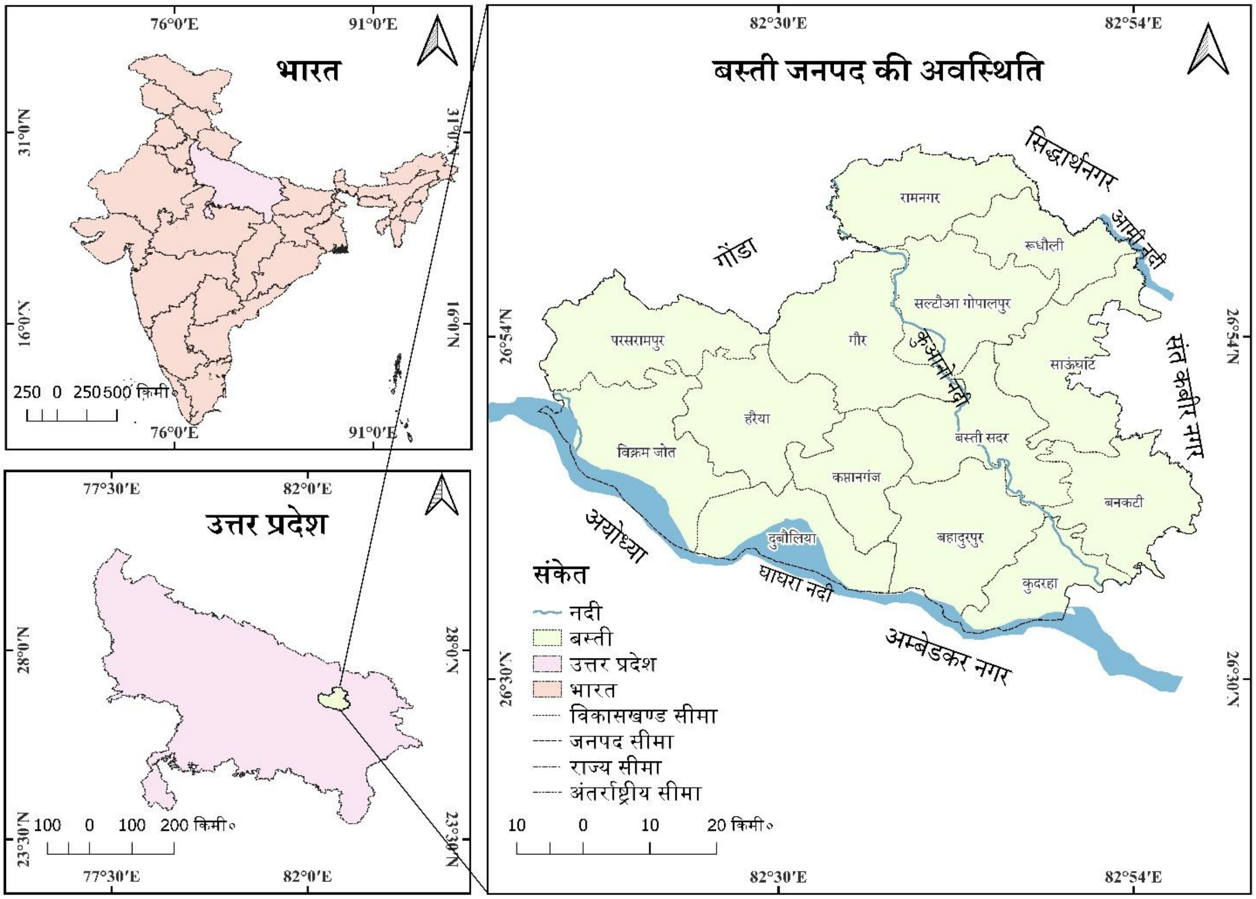

उद्देश्यः

- ➢ बस्ती जनपद में उपलब्ध कृषि संबंधी अवस्थापनात्मक सुविधाओं की वर्तमान स्थिति एवं क्षेत्रीय वितरण का अध्ययन करना।
- ➢ कृषि विकास के विभिन्न संकेतकों का विश्लेषण कर उनके स्थानिक प्रतिरूपों का अध्ययन करना।
- ➢ अध्ययन क्षेत्र में कृषि अवस्थापनात्मक सुविधाओं की उपलब्धता में विद्यमान क्षेत्रीय विषमताओं का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।
- ➢ कृषि विकास में अवस्थापनात्मक सुविधाओं की भूमिका को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

तथा शोध विधि तंत्रः

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन हेतु आवश्यक जानकारी विभिन्न सरकारी एवं संस्थागत स्रोतों से संकलित की गई है, जिनमें भारत की जनगणना, कृषि गणना, जिला सांख्यिकी पत्रिका, उत्तर प्रदेश अर्थ एवं संख्या प्रभाग, कृषि विभाग, सिंचाई विभाग तथा अन्य प्रकाशित शोध पत्र, पुस्तकें एवं प्रतिवेदन प्रमुख हैं। कृषि विकास तथा अवस्थापनात्मक सुविधाओं से संबंधित आँकड़ों का व्यवस्थित वर्गीकरण एवं सारणीकरण किया गया है। संकलित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, औसत, वृद्धि दर एवं सूचकांक जैसी सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया है। विभिन्न विकासखण्डों में उपलब्ध अवस्थापनात्मक सुविधाओं एवं कृषि विकास की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन कर क्षेत्रीय विषमताओं का मूल्यांकन

किया गया है। परिणामों को अधिक स्पष्ट एवं प्रभावी बनाने के लिए सारणियों, आरेखों तथा मानचित्रों का उपयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण हेतु एम.एस. एक्सेल सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषणः

सिंचाई सुविधाः

सिंचाई कृषि विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार है। यह कृषि उत्पादन को वर्षा की अनिश्चितता से मुक्त कर स्थिरता प्रदान करती है तथा फसल उत्पादकता, फसल सघनता एवं कृषि विविधीकरण को बढ़ावा देती है। सिंचाई सुविधाओं के विकास से किसान वर्ष में एक से अधिक फसलें उगाने में सक्षम होते हैं, जिससे कृषि आय में वृद्धि होती है (Hussain and Hanjra. 2004)। विशेषरूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश जैसे मानसूनी क्षेत्रों में सिंचाई कृषि विकास का प्रमुख निर्धारक तत्व है।

तालिका संख्या 01 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार सिंचाई साधनो एवं स्रोतों की स्थिति 2023–24।

विकासखण्ड	**नहर** लम्बाई (किमी० में)		**नलकूप** (संख्या में)				**कुएं** (संख्या में)	
			राजकीय		**निजी**			
	2014	2024	2014	2024	2014	2024	2014	2024
परसरामपुर	0	70	44	46	6087	6958	5	5
गौर	0	96	38	40	6533	7440	2	2
हरैया	0	97	28	30	8252	9248	3	3
विक्रम जोत	0	109	21	24	7614	8560	2	2
कप्तानगंज	0	69	45	48	3935	4603	0	0
रामनगर	26	60	75	77	4233	4911	2	2
सल्टौआ गोपालपुर	0	152	49	51	5718	6479	2	2
रूधौली	17	147	26	27	4417	5123	3	3
साऊंघाट	0	28	38	40	5690	6312	3	3
बस्ती सदर	10	71	81	83	4845	5469	4	4
बनकटी	0	53	63	65	6787	7511	6	6
बहादुरपुर	13	62	20	23	6089	6796	2	2
कुदरहा	0	24	30	32	4974	5646	7	7
दुबौलिया	0	33	16	26	3878	4471	3	3
योग जनपद	66	1071	574	612	79052	89527	44	44

स्रोत : जिला सांख्यिकी पत्रिका, बस्ती जनपद, 2024।

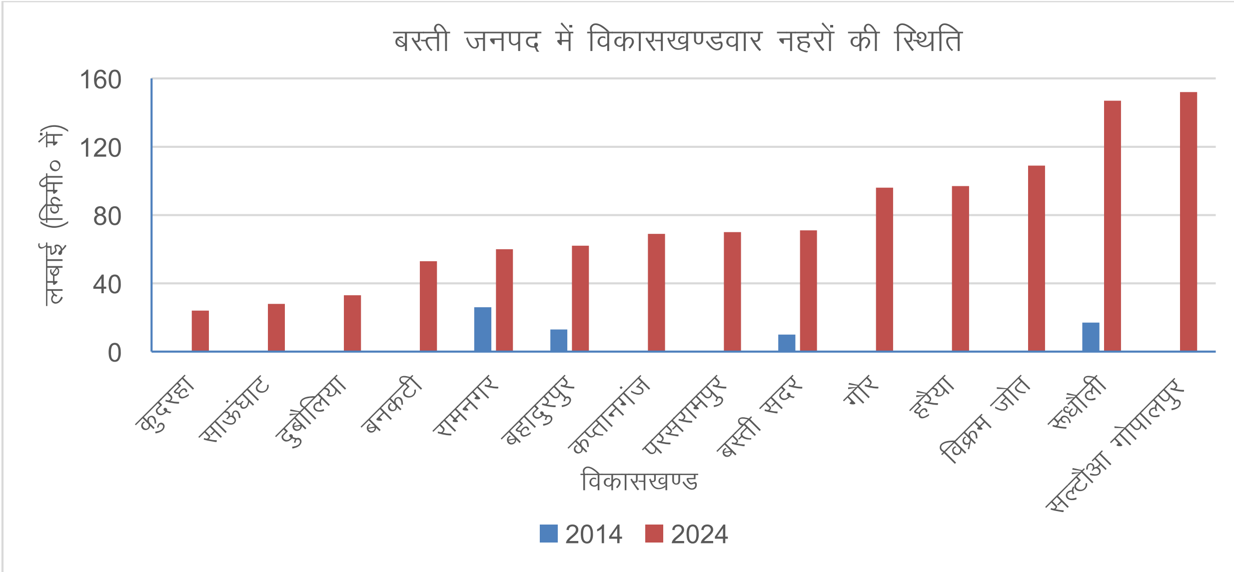

आरेख संख्या 01 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार नहरों की स्थिति (2014–2024)।

तालिका संख्या 01 के अनुसार बस्ती जनपद में वर्ष 2014 से 2024 के मध्य सिंचाई साधनों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जनपद में नहरों की कुल लंबाई 66 किमी० से बढ़कर 1071 किमी० हो गई, जो सिंचाई अवसंरचना के विस्तार को दर्शाती है। सर्वाधिक नहर लंबाई सल्टौआ गोपालपुर (152 किमी०), रूधौली (147 किमी०) तथा विक्रमजोत (109 किमी०) विकासखण्डों में पाई जाती है, जबकि कुदरहा (24 किमी०) एवं साऊंघाट (28 किमी०) में यह अपेक्षाकृत कम है। यह अंतर भौगोलिक स्थिति, नहर परियोजनाओं की उपलब्धता तथा जल संसाधनों के वितरण से संबंधित है।

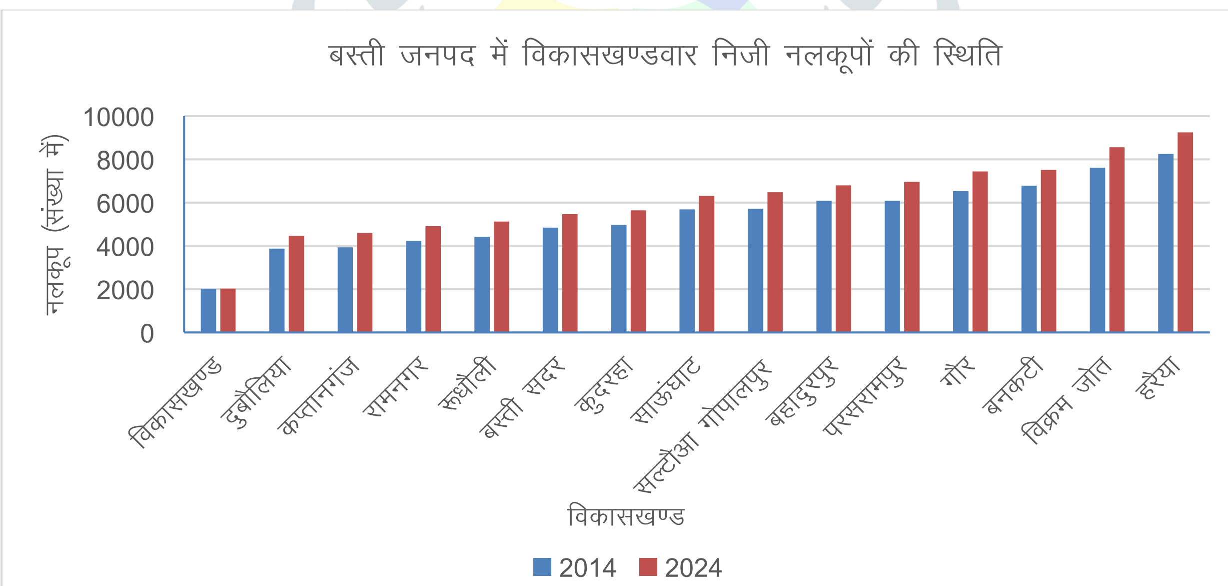

आरेख संख्या 02 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार निजी नलकूपों की स्थिति (2014–2024)।

राजकीय नलकूपों की संख्या 574 से बढ़कर 612 हो गई। बस्ती सदर (83), रामनगर (77) एवं बनकटी (65) में इनकी संख्या अधिक है, जबकि दुबौलिया (26) एवं विक्रमजोत (24) में अपेक्षाकृत कम है। निजी नलकूपों की संख्या 79,052 से बढ़कर 89,527 हो गई, जो लगभग 13.3 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाती है। हरैया (9,248), विक्रमजोत (8,560) एवं बनकटी (7,511) में निजी नलकूपों की संख्या सर्वाधिक है। इसका प्रमुख कारण इन क्षेत्रों में कृषि का अधिक व्यावसायीकरण, भूजल की उपलब्धता

तथा किसानों की आर्थिक क्षमता है। इसके विपरीत दुबौलिया (4,471) एवं कप्तानगंज (4,603) में निजी नलकूप अपेक्षाकृत कम हैं। कुओं की संख्या में कोई परिवर्तन नहीं हुआ और यह 44 पर स्थिर रही, जिससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक सिंचाई साधनों के प्रसार के कारण पारंपरिक सिंचाई स्रोतों का महत्व घटा है। समग्र रूप से देखा जाए तो बस्ती जनपद में सिंचाई सुविधाओं का विस्तार कृषि विकास के लिए सकारात्मक संकेत है, किन्तु विकासखण्डों के मध्य विद्यमान असमानताएँ संसाधनों के असमान वितरण एवं भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभाव को भी स्पष्ट करती हैं।

परिवहन सुविधाः

परिवहन सुविधा कृषि विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है, क्योंकि यह कृषि उत्पादन, कृषि आदानों की उपलब्धता तथा कृषि उत्पादों के विपणन को सीधे प्रभावित करती है। सुदृढ़ सड़क नेटवर्क किसानों को उन्नत बीज, उर्वरक, कीटनाशक, कृषि यंत्र तथा अन्य आवश्यक संसाधनों तक शीघ्र पहुँच प्रदान करता है। साथ ही, उत्पादित फसलों को बाजार, मंडियों एवं प्रसंस्करण केंद्रों तक कम समय और कम लागत में पहुँचाने में सहायता करता है। परिवहन सुविधाओं के विकास से कृषि का व्यावसायीकरण, फसल विविधीकरण तथा किसानों की आय में वृद्धि संभव होती है (Yadav and Singh. 2018)।

तालिका संख्या 02 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार पक्की सड़कों की स्थिति, 2023–24।

विकासखण्ड	पक्की सड़कों की लम्बाई (किमी० में)	
	2014	2024
परसरामपुर	245	335
गौर	246	338
हरैया	245	333
विक्रम जोत	233	332
कप्तानगंज	232	347
रामनगर	251	334
सल्टौआ गोपालपुर	257	319
रूधौली	252	335
साऊंघाट	226	332
बस्ती सदर	247	332
बनकटी	238	313
बहादुरपुर	242	344
कुदरहा	227	315
दुबौलिया	225	315

योग ग्रामीण	3366	4624
योग नगरीय	176	266
योग जनपद	3542	4890

स्रोत : जिला सांख्यिकी पत्रिका, बस्ती जनपद, 2024।

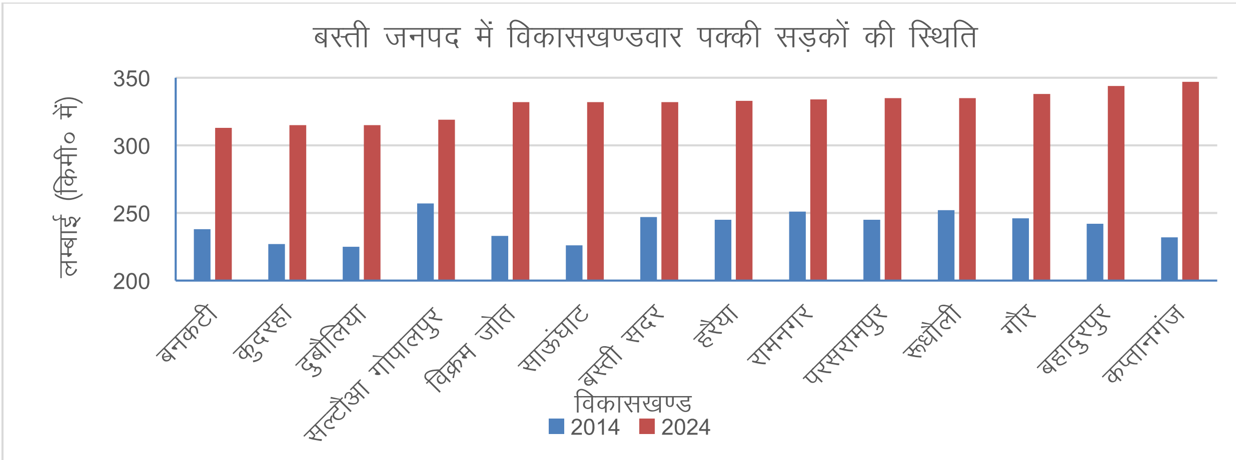

आरेख संख्या 03 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार पक्की सड़कों की स्थिति (2014–2024)।

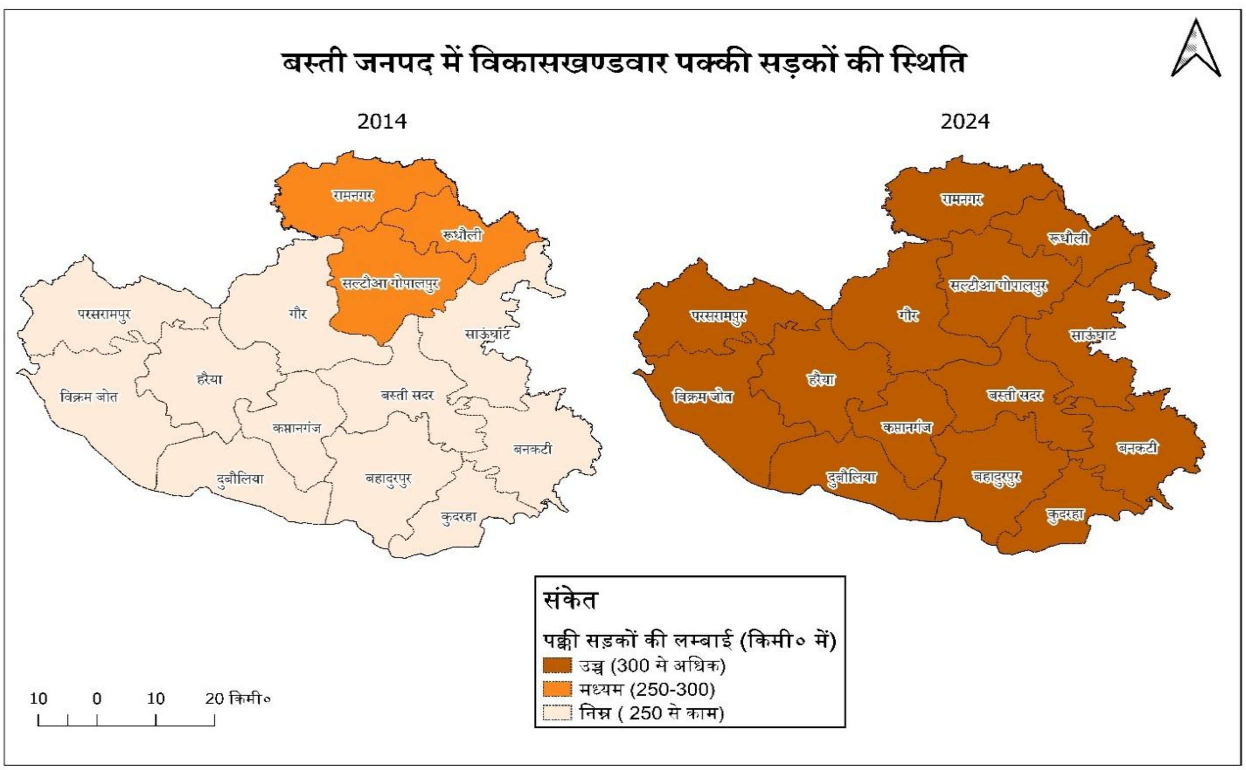

मानचित्र संख्या 02 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार पक्की सड़कों की स्थिति, 2014–2024।

तालिका संख्या 02 के अनुसार बस्ती जनपद में वर्ष 2014 से 2024 के मध्य पक्की सड़कों की लंबाई में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जनपद में कुल पक्की सड़कें 3542 किमी से बढ़कर 4890 किमी हो गई, अर्थात लगभग 38 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क लंबाई 3366 किमी से बढ़कर 4624 किमी तथा नगरीय क्षेत्रों में 176 किमी से बढ़कर 266 किमी हो गई, जो परिवहन अवसंरचना के विस्तार को दर्शाती है। विकासखण्ड स्तर पर वर्ष 2024 में सर्वाधिक पक्की सड़क लंबाई

कप्तानगंज (347 किमी), बहादुरपुर (344 किमी) तथा गौर (338 किमी) में पाई गई, जबकि बनकटी (313 किमी), कुदरहा (315 किमी) और दुबौलिया (315 किमी) में अपेक्षाकृत कम सड़कें उपलब्ध हैं। वर्ष 2014 से 2024 के मध्य सर्वाधिक वृद्धि कप्तानगंज (115 किमी), बहादुरपुर (102 किमी) तथा विक्रमजोत (99 किमी) में दर्ज की गई। इसके विपरीत सल्टौआ गोपालपुर में वृद्धि अपेक्षाकृत कम (62 किमी) रही।

यह क्षेत्रीय विषमता विभिन्न कारकों का परिणाम है। जिन विकासखण्डों में जनसंख्या घनत्व अधिक है, कृषि गतिविधियाँ विकसित हैं तथा प्रमुख बाजार एवं प्रशासनिक केंद्र स्थित हैं, वहाँ सड़क निर्माण को प्राथमिकता दी गई है। दूसरी ओर, अपेक्षाकृत पिछड़े अथवा कम विकसित क्षेत्रों में संसाधनों, निवेश तथा भौगोलिक परिस्थितियों के कारण सड़क विस्तार की गति धीमी रही। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना तथा राज्य सरकार की ग्रामीण संपर्क योजनाओं ने भी सड़क नेटवर्क के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बस्ती जनपद में परिवहन सुविधाओं का विकास कृषि आधुनिकीकरण, बाजार संपर्क और ग्रामीण आर्थिक विकास के लिए सकारात्मक संकेतक है, यद्यपि विकासखण्डों के मध्य विद्यमान क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने की आवश्यकता बनी हुई है।

विद्युत सुविधाः

विद्युत सुविधा कृषि विकास की आधारभूत अवस्थापनात्मक सुविधाओं में से एक है। यह सिंचाई, कृषि यंत्रीकरण, भंडारण तथा प्रसंस्करण गतिविधियों को गति प्रदान करती है। तालिका संख्या 03 के अनुसार बस्ती जनपद में वर्ष 2014 से 2024 के मध्य विद्युतीकृत ग्रामों तथा ऊर्जीकृत निजी नलकूपों/पम्पसेटों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो कृषि क्षेत्र में अवसंरचनात्मक विकास का संकेतक है। जनपद में एल.टी./एल.टी. मेन्स के अंतर्गत विद्युतीकृत ग्रामों की संख्या 2,273 से बढ़कर 3,160 हो गई, अर्थात लगभग 39 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। विकासखण्ड स्तर पर वर्ष 2024 में विक्रमजोत (299), बस्ती सदर (274) तथा गौर (265) में सर्वाधिक विद्युतीकृत ग्राम पाए गए, जबकि रामनगर (172) एवं कुदरहा (180) में इनकी संख्या अपेक्षाकृत कम रही।

तालिका संख्या 03 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार विद्युतीकरण की स्थिति (संख्या में), 2023–24।

विकासखण्ड	एल. टी./एल. टी. मेन्स के अंतर्गत विद्युतीकृत ग्राम		उर्जीकृत निजी नलकूप/पम्प सेट	
	2014	2024	2014	2024
परसरामपुर	146	244	33	582
गौर	174	265	99	633
हरैया	149	261	110	588
विक्रम जोत	265	299	77	514
कप्तानगंज	166	196	61	472
रामनगर	157	172	28	453

सल्टौआ गोपालपुर	173	247	108	582
रूधौली	145	203	76	470
साऊंघाट	153	186	54	600
बस्ती सदर	154	274	124	607
बनकटी	142	213	95	606
बहादुरपुर	168	229	21	649
कुदरहा	138	180	58	578
दुबौलिया	143	191	59	509
योग जनपद	2273	3160	1003	7843

स्रोत : जिला सांख्यिकी पत्रिका, बस्ती जनपद, 2024।

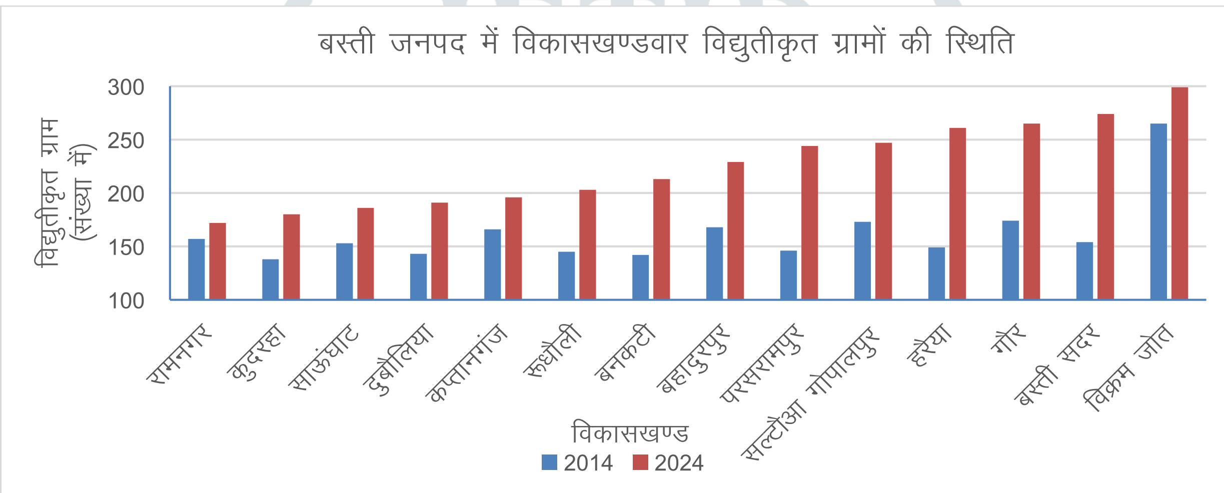

आरेख संख्या 04 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार विद्युतीकृत ग्रामों की स्थिति, (2014–2024)।

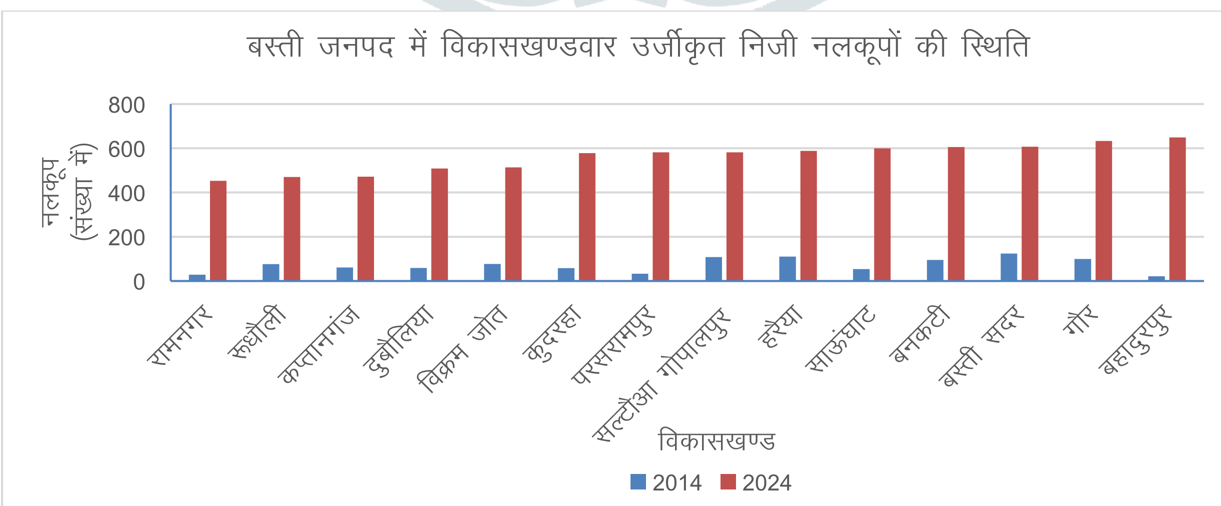

आरेख संख्या 05 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार उर्जीकृत निजी नलकूपों की स्थिति, (2014–2024)।

ऊर्जीकृत निजी नलकूपों एवं पम्पसेटों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। यह संख्या 2014 में 1,003 से बढ़कर 2024 में 7,843 हो गई, जो लगभग आठ गुना वृद्धि को दर्शाती है। बहादुरपुर (649), गौर (633), बस्ती सदर (607) तथा बनकटी (606) में इनकी संख्या सर्वाधिक है, जबकि रामनगर (453) और रूधौली (470) में अपेक्षाकृत कम है। इस वृद्धि के प्रमुख कारण ग्रामीण विद्युतीकरण योजनाओं का विस्तार, किसानों को विद्युत कनेक्शन की उपलब्धता, सिंचाई की बढ़ती आवश्यकता तथा कृषि के व्यावसायीकरण की प्रवृत्ति हैं। क्षेत्रीय विषमताएँ मुख्यतः विद्युत अवसंरचना, आर्थिक विकास के स्तर, भूजल उपयोग तथा किसानों की निवेश क्षमता में अंतर के कारण उत्पन्न हुई हैं। समग्रतः विद्युत सुविधाओं का विस्तार बस्ती जनपद में कृषि उत्पादकता एवं सिंचाई क्षमता बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

कृषि से सम्बन्धित अन्य सुविधायें:

कृषि विकास केवल सिंचाई, परिवहन एवं विद्युत सुविधाओं पर ही निर्भर नहीं करता, बल्कि बीज विक्रय केन्द्र, उर्वरक विक्रय केन्द्र, कीटनाशक विक्रय केन्द्र तथा ग्रामीण गोदाम जैसी सहायक कृषि अवस्थापनात्मक सुविधाएँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये सुविधाएँ किसानों को गुणवत्तापूर्ण कृषि आदानों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करती हैं तथा कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि का आधार प्रदान करती हैं Kumar et al. 2011)।

तालिका संख्या 04 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार कृषि से सम्बन्धित अन्य सुविधायें, 2023–24।

विकासखण्ड	बीज विक्रय केन्द्र		उर्वरक विक्रय केन्द्र		कीटनाशक विक्रय केन्द्र		ग्रामीण गोदाम	
	2014	2024	2014	2024	2014	2024	2014	2024
परसरामपुर	37	58	43	79	20	42	71	81
गौर	38	59	39	79	18	43	57	67
हरैया	46	48	45	83	10	32	42	52
विक्रम जोत	28	39	37	66	4	25	51	61
कप्तानगंज	28	40	37	62	17	41	47	57
रामनगर	28	67	44	76	28	42	63	73
सल्टौआ गोपालपुर	27	74	50	80	18	30	46	56
रूधौली	22	64	48	61	19	37	43	53
साऊंघाट	26	61	60	76	29	48	81	81
बस्ती सदर	39	89	50	71	35	60	63	73
बनकटी	31	60	40	78	18	45	50	50
बहादुरपुर	21	44	33	56	8	36	37	42
कुदरहा	28	35	30	71	10	31	42	47
दुबौलिया	22	31	25	58	10	29	26	27
योग ग्रामीण	421	769	581	996	244	541	719	820

योग नगरीय	32	133	35	115	35	79	0	0
योग जनपद	453	902	503	1111	279	620	719	820

स्रोत : जिला सांख्यिकी पत्रिका, बस्ती जनपद, 2024।

तालिका संख्या 04 के अनुसार वर्ष 2014 से 2024 के मध्य बस्ती जनपद में कृषि संबंधी सभी सुविधाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। बीज विक्रय केन्द्रों की संख्या 453 से बढ़कर 902 हो गई, जो लगभग दोगुनी वृद्धि को दर्शाती है। विकासखण्ड स्तर पर बस्ती सदर (89), सल्टौआ गोपालपुर (74) तथा रामनगर (67) में सर्वाधिक बीज केन्द्र पाए गए, जबकि दुबौलिया (31) एवं कुदरहा (35) में इनकी संख्या अपेक्षाकृत कम रही। यह अंतर कृषि क्षेत्र के विस्तार, किसानों की मांग तथा बाजार सुविधाओं की उपलब्धता से जुड़ा है।

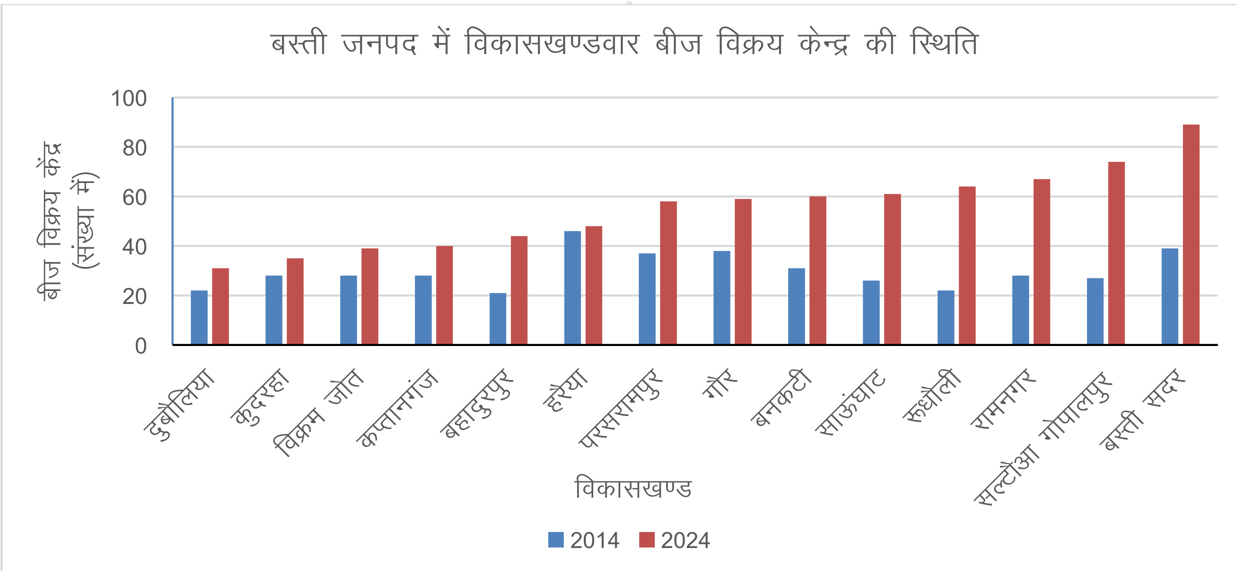

आरेख संख्या 06 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार बीज विक्रय केन्द्र की स्थिति, (2014–2024)।

उर्वरक विक्रय केन्द्रों की संख्या 503 से बढ़कर 1,111 हो गई। हरैया (83), सल्टौआ गोपालपुर (80), परसरामपुर एवं गौर (79–79) में इनकी संख्या अधिक है, जबकि बहादुरपुर (56) एवं दुबौलिया (58) में अपेक्षाकृत कम है। इसी प्रकार कीटनाशक विक्रय केन्द्रों की संख्या 279 से बढ़कर 620 हो गई। बस्ती सदर (60), साऊंघाट (48) तथा बनकटी (45) में इनकी उपलब्धता अधिक है। यह स्थिति आधुनिक कृषि तकनीकों एवं व्यावसायिक खेती के बढ़ते प्रसार को इंगित करती है।

ग्रामीण गोदामों की संख्या 719 से बढ़कर 820 हुई है। साऊंघाट (81), परसरामपुर (81), रामनगर (73) एवं बस्ती सदर (73) में गोदाम सुविधाएँ अपेक्षाकृत विकसित हैं, जबकि दुबौलिया (27) एवं बहादुरपुर (42) में इनकी संख्या कम है। इसका प्रमुख कारण कृषि उत्पादन की मात्रा, भंडारण की आवश्यकता तथा सरकारी एवं सहकारी निवेश का असमान वितरण है। विकासखण्डवार क्षेत्रीय विषमताएँ मुख्यतः कृषि के व्यावसायीकरण के स्तर, जनसंख्या घनत्व, बाजारों की निकटता, परिवहन संपर्क, सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन तथा किसानों की आर्थिक स्थिति में अंतर के कारण उत्पन्न हुई हैं। जिन विकासखण्डों में कृषि अधिक विकसित एवं बाजारोन्मुख है, वहाँ कृषि सेवा सुविधाओं का विस्तार अधिक हुआ है। समग्र रूप से देखा जाए तो बस्ती जनपद में कृषि संबंधी अवस्थापनात्मक सुविधाओं का विस्तार कृषि आधुनिकीकरण, उत्पादकता वृद्धि तथा ग्रामीण

आर्थिक विकास के लिए सकारात्मक संकेत प्रदान करता है, यद्यपि विकासखण्डों के मध्य विद्यमान असमानताओं को कम करने की आवश्यकता बनी हुई है (World Bank. 2008)।

फसल उत्पादनः

तालिका संख्या 05 से स्पष्ट होता है कि बस्ती जनपद में वर्ष 2014 से 2024 के मध्य कुल खाद्यान्न फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जनपद का कुल खाद्यान्न क्षेत्रफल 2,33,343 हेक्टेयर से बढ़कर 2,89,045 हेक्टेयर हो गया, अर्थात लगभग 23.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। यह वृद्धि कृषि अवस्थापनात्मक सुविधाओं के विस्तार, सिंचाई साधनों की उपलब्धता तथा उन्नत कृषि तकनीकों के बढ़ते उपयोग का परिणाम है।

तालिका संख्या 05 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार मुख्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल, 2023–24।

विकासखण्ड	**कुल खाद्यान्न** (हेक्ट. में)	
	2014	2024
परसरामपुर	16874	20561
गौर	17688	21914
हरैया	16472	20411
विक्रम जोत	15345	18674
कप्तानगंज	12836	15956
रामनगर	13588	17062
सल्टौआ गोपालपुर	19296	24135
रूधौली	15113	18584
साऊंघाट	18737	23199
बस्ती सदर	17768	22126
बनकटी	19691	24462
बहादुरपुर	21133	26424
कुदरहा	13976	17140
दुबौलिया	14168	17544
योग ग्रामीण	232685	288192
योग नगरीय	658	853
योग जनपद	233343	289045

स्रोत : जिला सांख्यिकी पत्रिका, बस्ती जनपद, 2024।

विकासखण्ड स्तर पर वर्ष 2024 में सर्वाधिक खाद्यान्न क्षेत्रफल बहादुरपुर (26,424 हे.), बनकटी (24,462 हे.) तथा सल्टौआ गोपालपुर (24,135 हे.) में पाया गया। इसके विपरीत कप्तानगंज (15,956 हे.) तथा रामनगर (17,062 हे.) में अपेक्षाकृत कम

क्षेत्रफल दर्ज किया गया। वृद्धि की दृष्टि से बहादुरपुर, बनकटी, साऊंघाट तथा गौर विकासखण्डों में उल्लेखनीय विस्तार देखा गया है। यह परिवर्तन मुख्यतः सिंचाई सुविधाओं के विकास, विद्युत चालित नलकूपों की बढ़ती संख्या, उन्नत बीजों एवं उर्वरकों की उपलब्धता तथा कृषि विस्तार सेवाओं के प्रसार के कारण हुआ है। जिन विकासखण्डों में कृषि अवसंरचना अधिक विकसित है, वहाँ किसानों ने अधिक भूमि को खाद्यान्न उत्पादन के अंतर्गत लाया है।

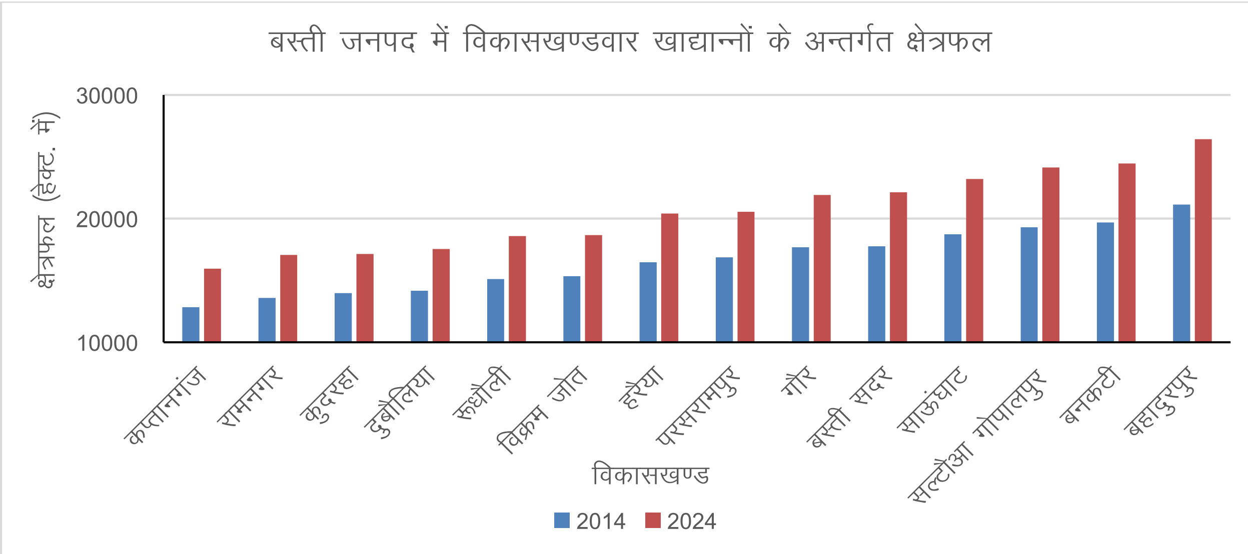

आरेख संख्या 07 : बस्ती जनपद में विकासखण्डवार खाद्यान्नों के अन्तर्गत क्षेत्रफल (हेक्ट. में), (2014–2024)।

विकासखण्डवार क्षेत्रीय विषमता के पीछे भूमि संसाधनों की उपलब्धता, सिंचाई की स्थिति, मृदा उर्वरता, कृषि निवेशों की पहुँच तथा बाजार सुविधाओं में अंतर प्रमुख कारण हैं। बहादुरपुर, बनकटी और सल्टौआ गोपालपुर जैसे क्षेत्रों में बेहतर कृषि सुविधाओं के कारण खाद्यान्न क्षेत्रफल अधिक है, जबकि कप्तानगंज एवं रामनगर में सीमित संसाधनों एवं स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यह अपेक्षाकृत कम पाया जाता है। समग्र रूप से यह प्रवृत्ति जनपद में कृषि विकास की सकारात्मक दिशा को प्रदर्शित करती है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बस्ती जनपद में कृषि विकास और अवस्थापनात्मक सुविधाओं के मध्य गहरा एवं प्रत्यक्ष संबंध विद्यमान है। कृषि विकास की गति केवल प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि सिंचाई, परिवहन, विद्युत तथा कृषि सेवा सुविधाओं जैसी अवस्थापनात्मक व्यवस्थाएँ इसकी आधारशिला का कार्य करती हैं। वर्ष 2014 से 2024 के मध्य जनपद में इन सुविधाओं के विस्तार ने कृषि उत्पादन एवं कृषि क्षेत्रफल में उल्लेखनीय वृद्धि को संभव बनाया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के परिणामस्वरूप नहरों की लंबाई, राजकीय एवं निजी नलकूपों की संख्या में वृद्धि हुई, जिससे किसानों की वर्षा पर निर्भरता कम हुई तथा फसल सघनता एवं उत्पादकता में सुधार हुआ। इसी प्रकार पक्की सड़कों की लंबाई में वृद्धि ने कृषि आदानों की उपलब्धता तथा कृषि उत्पादों के विपणन को सुगम बनाकर कृषि के व्यावसायीकरण को प्रोत्साहित किया। विद्युत सुविधाओं के विस्तार से ऊर्जीकृत नलकूपों एवं पम्पसेटों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई, जिसने सिंचाई क्षमता तथा कृषि यंत्रीकरण को सुदृढ़ बनाया। साथ ही बीज, उर्वरक एवं कीटनाशक विक्रय केन्द्रों तथा ग्रामीण गोदामों की बढ़ती संख्या ने आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रसार और कृषि उत्पादों के सुरक्षित भंडारण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन अवस्थापनात्मक सुविधाओं के सकारात्मक प्रभाव के परिणामस्वरूप जनपद का कुल खाद्यान्न क्षेत्रफल

2,33,343 हेक्टेयर से बढ़कर 2,89,045 हेक्टेयर हो गया, जो कृषि विकास की स्पष्ट अभिव्यक्ति है। तथापि विकासखण्डों के मध्य अवस्थापनात्मक सुविधाओं एवं कृषि विकास के स्तर में उल्लेखनीय क्षेत्रीय विषमताएँ भी विद्यमान हैं। जिन विकासखण्डों में सिंचाई, सड़क, विद्युत तथा कृषि सेवा सुविधाएँ अपेक्षाकृत अधिक विकसित हैं, वहाँ कृषि विकास का स्तर भी अधिक पाया गया है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अवस्थापनात्मक सुविधाएँ कृषि विकास की प्रेरक शक्ति हैं (Singh. 2019)। बस्ती जनपद में कृषि विकास को और अधिक संतुलित एवं सतत बनाने के लिए अविकसित विकासखण्डों में इन सुविधाओं का समान एवं योजनाबद्ध विस्तार अत्यंत आवश्यक है, जिससे क्षेत्रीय असमानताओं को कम करते हुए समग्र कृषि एवं ग्रामीण विकास को गति प्रदान की जा सके।

सन्दर्भ सूचीः

- Bhalla, G. S., & Singh, G. (2010). Economic liberalisation and Indian agriculture. Institute for Studies in Industrial Development.
- Census of India. (2011). District census handbook: Basti district. Office of the Registrar General and Census Commissioner, India.
- Datt, R., & Sundharam, K. P. M. (2021). Indian economy (76th ed.). S. Chand Publishing.
- Directorate of Economics and Statistics, Government of Uttar Pradesh. (2024). Statistical diary of Uttar Pradesh 2023–24. Government of Uttar Pradesh.
- Government of India. (2023). Agricultural statistics at a glance 2023. Ministry of Agriculture and Farmers Welfare.
- Government of Uttar Pradesh. (2024). District statistical handbook: Basti. Economics and Statistics Division.
- Hazell, P. B. R., & Ramasamy, C. (1991). The green revolution reconsidered: The impact of high-yielding rice varieties in South India. Johns Hopkins University Press.
- Hussain, I., & Hanjra, M. A. (2004). Irrigation and poverty alleviation: Review of the empirical evidence. Irrigation and Drainage, 53(1), 1–15.
- Indian Council of Agricultural Research. (2022). Handbook of agriculture (7th ed.). ICAR Publications.
- Kumar, P., Kumar, A., & Sharma, A. N. (2011). Rural infrastructure and agricultural development in India. Agricultural Economics Research Review, 24(1), 67–78.
- Ministry of Agriculture and Farmers Welfare. (2024). Annual report 2023–24. Government of India.

- National Bank for Agriculture and Rural Development. (2023). Annual report 2022–23. NABARD.
- Singh, J., & Dhillon, S. S. (2004). Agricultural geography (3rd ed.). Tata McGraw-Hill.
- Singh, K. (2019). Agricultural infrastructure and regional development in India. Indian Journal of Regional Science, 51(2), 45–56.
- Uttar Pradesh Department of Agriculture. (2024). Agricultural development report of Uttar Pradesh 2023–24. Government of Uttar Pradesh.
- World Bank. (2008). World development report 2008: Agriculture for development. World Bank Publications.
- Yadav, R. P., & Singh, S. P. (2018). Role of rural infrastructure in agricultural development: A regional analysis of Uttar Pradesh. Journal of Rural Development, 37(3), 421–438.